

धनो यो वीरनाम ॥ २ ॥ हाया धुन कर्त ॥ ३ ॥ गायत्रि मंत्र गायमा वा दाय वानस
 मरुत्या र्जुनी गायमा यो ॥ ४ ॥ नत्यसंसाज गच्छ वान वा दाय वानस र्जुनी यो ॥ ५ ॥
 शस्य त्रुन स प्रविद्य ॥ ६ ॥ मरुत्या र्जुनी यो ॥ ७ ॥ नत्यसंसाज गच्छ वान वा दाय वानस र्जुनी यो ॥ ८ ॥
 कुरु जनय मां लघु कर्षी त्रुन स प्रविद्य ॥ ९ ॥ मरुत्या र्जुनी यो ॥ १० ॥ नत्यसंसाज गच्छ वान वा दाय वानस र्जुनी यो ॥ ११ ॥
 त्रुनि धी दक्ष त्रुन स प्रविद्य ॥ १२ ॥ मरुत्या र्जुनी यो ॥ १३ ॥ नत्यसंसाज गच्छ वान वा दाय वानस र्जुनी यो ॥ १४ ॥

१८५ विष्णुपंथी स्तोत्राणि

जीमवतान

ASHA ARCHIVES
3057

ॐ नमः शिवाय ॥ वक्रा घी वक्रा सा विणी वक्रा नन्द विवदनी चहु यु
नं चहु वक्रा नं चहु वदय जायनी चहु रं रं वि लं चहु वायी चहु रं गय जायनी
हं सयुक्त विमल मु सोम्य नृपी धितामदी यवृत्तं कायु मा ला के वज्रदा रुय
विमल यात्रिनी पीनयुक्ता वलदती पीताङ्गी पीनय सभा दीना यदा वर्मनुमा
पीनगन्धानुल धिनी उदय जात ला वक्रा प्रयाग कृष्ण सिनी पूर्व धि ० सि
नानि र्य वक्रा १ कि नभा मुता ॥ ॥ माह १६ श्री महादेवी माह मायानि वक्रा नी

श्रीशफुलीश्रीरत्ननाथउपाध्यायनजिनेउद्धारपाठहुल्लो

महावृषमहावृडा महादंकावनादिनी कमत्रक निरं दं दयालं
 निमेषत्री तिलावर्ध प्रिष्टलं अक्षसुगुणकमधुलं लाजालकात्रमर्वाक्षी
 दक्षिणेनवत्रयदा सुष्टिष्टि मित्रिनाभनी मर्वाक्षी सुत्रध्वनी (व्यक्तपृष्ठ 2
 वर्णादवी श्वनाक्षी श्वनवाससा (व्यक्तपृष्ठ 2) मित्रिनाभनी मर्वाक्षी सुत्रध्वनी
 राधस्यामहादंकावनादिनी निवादिनि मित्रिनाभनी मर्वाक्षी सुत्रध्वनी
 मासुक्तं ॥ २ ॥ वालकावमहावृडा कामात्री कलावनी वक्रतम्यप्रोक्षनी श्व

दूनामविद्याकात्रुगुरुज्ञांकिश्रुतसिद्धिपात्रधर्माश्रुतकामार्थयत्रमं
भाकिमयुत्रवत्रादिनीत्रकपुष्यत्रादिनीत्रकमासावशासिनीकालाष्ट्रः
त्रिमहादेवगुरुवत्तुद्वित्रासिनीयाम्यापी०स्त्रितानिर्गकामात्रीयनमाश्रु ३
त॥३॥वैकुण्ठीविकुमायाश्चैवस्यद्वज्जाननोसिद्धीद्वित्रितंश्रमवधूनी
गत्रुतापत्रिसंस्त्रिता०सिचवक्रगदादृष्टत्रुवाकृद्विद्विषितात्रलजाला
महाकीजा नानात्रलविरुषिताहृदिगयश्चजगन्ध्याश्चसदाहृदिगध्यावी

वीस्त्रजामध्यातालेष्ट्रस्त्रितियूनसंस्त्रिताष्ट्रदाशामहादेवकद
म्वरुष्ट्रनृवासिनि, त्रिष्टुत्रियि०नमनायायदीनमाश्रुत॥५॥वात्रादिष्टा
त्रत्रकाश्रीत्रककशासदाद्वीद्वृष्टकान्तराशीयात्राकाशत्रलजानी
कपालमात्रिकामालात्रिष्टुत्रियुष्टा०श्रितामहाश्रुमसनायुष्टाद्वित्रितप्रि
समयुष्टामीनाकृष्णकफिकाशालादायनस्रुषितात्रिनर्तकलितंददं
द्वृष्टद्वयत्रिनासिनीजयन्तिद्वृष्टसंस्त्रुतन्निष्ठद्वृष्टनियानिनिनागयि०

श्रुतानिर्णयं कात्रयुयीनमास्तु ॥ ३॥ भाव्यं श्रुतीं श्रुतं श्रुतं श्रुतं श्रुतं
 भाव्यं श्रुतं श्रुतं श्रुतं श्रुतं श्रुतं श्रुतं श्रुतं श्रुतं श्रुतं श्रुतं श्रुतं श्रुतं श्रुतं
 श्रुतं श्रुतं श्रुतं श्रुतं श्रुतं श्रुतं श्रुतं श्रुतं श्रुतं श्रुतं श्रुतं श्रुतं श्रुतं श्रुतं
 श्रुतं श्रुतं श्रुतं श्रुतं श्रुतं श्रुतं श्रुतं श्रुतं श्रुतं श्रुतं श्रुतं श्रुतं श्रुतं श्रुतं
 श्रुतं श्रुतं श्रुतं श्रुतं श्रुतं श्रुतं श्रुतं श्रुतं श्रुतं श्रुतं श्रुतं श्रुतं श्रुतं श्रुतं
 श्रुतं श्रुतं श्रुतं श्रुतं श्रुतं श्रुतं श्रुतं श्रुतं श्रुतं श्रुतं श्रुतं श्रुतं श्रुतं श्रुतं
 श्रुतं श्रुतं श्रुतं श्रुतं श्रुतं श्रुतं श्रुतं श्रुतं श्रुतं श्रुतं श्रुतं श्रुतं श्रुतं श्रुतं

धृत्वा ह्यसिनि दंष्ट्रा कत्रालत्रकां श्री कथिलकशी कथादत्री कथां नीलीव
 ती मदी किं काललनन श्रुतं मद्रापाता मना तूरा रूपा कृपा सुभाकी ना
 अशितमयुता रूपा दमनू खद्वान् श्रुती कली कया लक्ष्मि वत्रदार
 य रूपा मितानत्रमध्वतादवी दियी रूपा कठि श्रुता मधुमाला धत्री यादी
 अष्टारुत्रद रूपा मितानत्रमध्वतादवी दियी रूपा कठि श्रुता मधुमाला धत्री यादी
 मंका श्री रामकृष्ण प्रणियता कालामात्र कलादका नदकाति समय रूपा रूपा

[illegible]

लक्ष्मीनमोस्तुते ॥४॥ ज्येष्ठद्वयसिद्धिद्वयी ज्येष्ठद्वयानुवासाभिधा ज्येष्ठद्वय
संयुक्ता ज्येष्ठमाष्टनमोस्तुते ॥५॥ अनीसर्वरुगानां सर्वसत्त्वकात्रिणी सर्व
दायकरीद्वयी संसालयासकंदनी त्वमेव सर्वभाभर्त्ता त्वमेव यागयुधीनी ६
त्वमेव षष्ठि संकाय त्वमेव विष्णुयुधीनी पी० १०४ अर्महादर्वद्वयदेव
महेश्वरं रुद्रं श्रीमं श्रीदद्यान्मिहीनयुधीनी नीलाश्विनतिरुंदरं
मातृकायमस्तु सर्वानानासुखसमाकिता नानासुखप्राप्तुं तिलायन

महाभक्त श्री गुरुदेव सदायुक्त यत्नमस्तु तत्र दत्तपुत्रस्य कृपा ॥
 श्री लक्ष्मण स्वामी, उमरूत नृपतीधर, पात्रिकातमकवाति स्वर्गयमधर्मा
 धुरायासाक सधर्मद्वन्द्वसुत्रिणदधर्म कपालकर्मिकेयव गुरुचर्म
 वगुक्तिन, दत्तकलालवदना, श्राव्ययमकनिवृत्ता, सालकात्र नृसदान्
 नवास्त्रीयुष्यशारिका, श्रीममालाधर्मद्वन्द्व कपालमालिनी, कोरुमयूज
 महीमहाभक्त श्री कपालचन्द्रस्य, महायुगासनातिथि, नृयगीतसदा

[illegible]

कर्म नामयत्नात्कचित्कानि नामयत्नीदृशवता नामयत्कलङ्कागमनिना
 मलद्वयदशापीति नामयत्कयदाप्रिय नामयत्प्रिय सुगमं नायमल्लिख्यथा
 नं नामयत्कलङ्काविद्याकृति नामयत्गलोकध्वमि नामयत्सर्वपाकक आय
 न्नात्राङ्गभोग्यं धनधान्यविवर्द्धनं धर्मार्थकामसाधनानां मससोराग्यम्
 कर्म त्रिद्वि सिद्धि गिर्यलक्ष्मी विद्याज्ञानात्राकिर्तु बुद्धियुक्तमसमिगुय बु
 द्धिर्भवति । तदिदं सकालमत्र नं गत्यात्तनासमत्तदा सर्वलोकयस

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥ अथ बालका न संमाच ॥ ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥ मातृका ॥ ३ ॥ वाच ॥ ४ ॥ कोशिक मुनि ॥ ५ ॥ ना ॥ ६ ॥ व ॥ ७ ॥ म ॥ ८ ॥ म ॥ ९ ॥ रा ॥ १० ॥
 व ॥ ११ ॥ द ॥ १२ ॥ ती ॥ १३ ॥ ना ॥ १४ ॥ म ॥ १५ ॥ भ ॥ १६ ॥ ग ॥ १७ ॥ र्ग ॥ १८ ॥ श ॥ १९ ॥ र्ग ॥ २० ॥ व ॥ २१ ॥ र्ग ॥ २२ ॥ क ॥ २३ ॥ श ॥ २४ ॥ क ॥ २५ ॥ मु ॥ २६ ॥ नि ॥ २७ ॥ ॥ २८ ॥ क ॥ २९ ॥ र्ग ॥ ३० ॥ य ॥ ३१ ॥ व ॥ ३२ ॥ क ॥ ३३ ॥ श ॥ ३४ ॥ म ॥ ३५ ॥ य ॥ ३६ ॥ ॥ ३७ ॥ य ॥ ३८ ॥ म ॥ ३९ ॥ अ ॥ ४० ॥ ध ॥ ४१ ॥ र्क ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ य ॥ ४४ ॥ म ॥ ४५ ॥ अ ॥ ४६ ॥ ध ॥ ४७ ॥ र्क ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ य ॥ ५० ॥ म ॥ ५१ ॥ अ ॥ ५२ ॥ ध ॥ ५३ ॥ र्क ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ य ॥ ५६ ॥ म ॥ ५७ ॥ अ ॥ ५८ ॥ ध ॥ ५९ ॥ र्क ॥ ६० ॥ ॥ ६१ ॥ य ॥ ६२ ॥ म ॥ ६३ ॥ अ ॥ ६४ ॥ ध ॥ ६५ ॥ र्क ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ य ॥ ६८ ॥ म ॥ ६९ ॥ अ ॥ ७० ॥ ध ॥ ७१ ॥ र्क ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ य ॥ ७४ ॥ म ॥ ७५ ॥ अ ॥ ७६ ॥ ध ॥ ७७ ॥ र्क ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ य ॥ ८० ॥ म ॥ ८१ ॥ अ ॥ ८२ ॥ ध ॥ ८३ ॥ र्क ॥ ८४ ॥ ॥ ८५ ॥ य ॥ ८६ ॥ म ॥ ८७ ॥ अ ॥ ८८ ॥ ध ॥ ८९ ॥ र्क ॥ ९० ॥ ॥ ९१ ॥ य ॥ ९२ ॥ म ॥ ९३ ॥ अ ॥ ९४ ॥ ध ॥ ९५ ॥ र्क ॥ ९६ ॥ ॥ ९७ ॥ य ॥ ९८ ॥ म ॥ ९९ ॥ अ ॥ १०० ॥ ध ॥ १०१ ॥ र्क ॥ १०२ ॥ ॥ १०३ ॥ य ॥ १०४ ॥ म ॥ १०५ ॥ अ ॥ १०६ ॥ ध ॥ १०७ ॥ र्क ॥ १०८ ॥ ॥ १०९ ॥ य ॥ ११० ॥ म ॥ १११ ॥ अ ॥ ११२ ॥ ध ॥ ११३ ॥ र्क ॥ ११४ ॥ ॥ ११५ ॥ य ॥ ११६ ॥ म ॥ ११७ ॥ अ ॥ ११८ ॥ ध ॥ ११९ ॥ र्क ॥ १२० ॥ ॥ १२१ ॥ य ॥ १२२ ॥ म ॥ १२३ ॥ अ ॥ १२४ ॥ ध ॥ १२५ ॥ र्क ॥ १२६ ॥ ॥ १२७ ॥ य ॥ १२८ ॥ म ॥ १२९ ॥ अ ॥ १३० ॥ ध ॥ १३१ ॥ र्क ॥ १३२ ॥ ॥ १३३ ॥ य ॥ १३४ ॥ म ॥ १३५ ॥ अ ॥ १३६ ॥ ध ॥ १३७ ॥ र्क ॥ १३८ ॥ ॥ १३९ ॥ य ॥ १४० ॥ म ॥ १४१ ॥ अ ॥ १४२ ॥ ध ॥ १४३ ॥ र्क ॥ १४४ ॥ ॥ १४५ ॥ य ॥ १४६ ॥ म ॥ १४७ ॥ अ ॥ १४८ ॥ ध ॥ १४९ ॥ र्क ॥ १५० ॥ ॥ १५१ ॥ य ॥ १५२ ॥ म ॥ १५३ ॥ अ ॥ १५४ ॥ ध ॥ १५५ ॥ र्क ॥ १५६ ॥ ॥ १५७ ॥ य ॥ १५८ ॥ म ॥ १५९ ॥ अ ॥ १६० ॥ ध ॥ १६१ ॥ र्क ॥ १६२ ॥ ॥ १६३ ॥ य ॥ १६४ ॥ म ॥ १६५ ॥ अ ॥ १६६ ॥ ध ॥ १६७ ॥ र्क ॥ १६८ ॥ ॥ १६९ ॥ य ॥ १७० ॥ म ॥ १७१ ॥ अ ॥ १७२ ॥ ध ॥ १७३ ॥ र्क ॥ १७४ ॥ ॥ १७५ ॥ य ॥ १७६ ॥ म ॥ १७७ ॥ अ ॥ १७८ ॥ ध ॥ १७९ ॥ र्क ॥ १८० ॥ ॥ १८१ ॥ य ॥ १८२ ॥ म ॥ १८३ ॥ अ ॥ १८४ ॥ ध ॥ १८५ ॥ र्क ॥ १८६ ॥ ॥ १८७ ॥ य ॥ १८८ ॥ म ॥ १८९ ॥ अ ॥ १९० ॥ ध ॥ १९१ ॥ र्क ॥ १९२ ॥ ॥ १९३ ॥ य ॥ १९४ ॥ म ॥ १९५ ॥ अ ॥ १९६ ॥ ध ॥ १९७ ॥ र्क ॥ १९८ ॥ ॥ १९९ ॥ य ॥ २०० ॥ म ॥ २०१ ॥ अ ॥ २०२ ॥ ध ॥ २०३ ॥ र्क ॥ २०४ ॥ ॥ २०५ ॥ य ॥ २०६ ॥ म ॥ २०७ ॥ अ ॥ २०८ ॥ ध ॥ २०९ ॥ र्क ॥ २१० ॥ ॥ २११ ॥ य ॥ २१२ ॥ म ॥ २१३ ॥ अ ॥ २१४ ॥ ध ॥ २१५ ॥ र्क ॥ २१६ ॥ ॥ २१७ ॥ य ॥ २१८ ॥ म ॥ २१९ ॥ अ ॥ २२० ॥ ध ॥ २२१ ॥ र्क ॥ २२२ ॥ ॥ २२३ ॥ य ॥ २२४ ॥ म ॥ २२५ ॥ अ ॥ २२६ ॥ ध ॥ २२७ ॥ र्क ॥ २२८ ॥ ॥ २२९ ॥ य ॥ २३० ॥ म ॥ २३१ ॥ अ ॥ २३२ ॥ ध ॥ २३३ ॥ र्क ॥ २३४ ॥ ॥ २३५ ॥ य ॥ २३६ ॥ म ॥ २३७ ॥ अ ॥ २३८ ॥ ध ॥ २३९ ॥ र्क ॥ २४० ॥ ॥ २४१ ॥ य ॥ २४२ ॥ म ॥ २४३ ॥ अ ॥ २४४ ॥ ध ॥ २४५ ॥ र्क ॥ २४६ ॥ ॥ २४७ ॥ य ॥ २४८ ॥ म ॥ २४९ ॥ अ ॥ २५० ॥ ध ॥ २५१ ॥ र्क ॥ २५२ ॥ ॥ २५३ ॥ य ॥ २५४ ॥ म ॥ २५५ ॥ अ ॥ २५६ ॥ ध ॥ २५७ ॥ र्क ॥ २५८ ॥ ॥ २५९ ॥ य ॥ २६० ॥ म ॥ २६१ ॥ अ ॥ २६२ ॥ ध ॥ २६३ ॥ र्क ॥ २६४ ॥ ॥ २६५ ॥ य ॥ २६६ ॥ म ॥ २६७ ॥ अ ॥ २६८ ॥ ध ॥ २६९ ॥ र्क ॥ २७० ॥ ॥ २७१ ॥ य ॥ २७२ ॥ म ॥ २७३ ॥ अ ॥ २७४ ॥ ध ॥ २७५ ॥ र्क ॥ २७६ ॥ ॥ २७७ ॥ य ॥ २७८ ॥ म ॥ २७९ ॥ अ ॥ २८० ॥ ध ॥ २८१ ॥ र्क ॥ २८२ ॥ ॥ २८३ ॥ य ॥ २८४ ॥ म ॥ २८५ ॥ अ ॥ २८६ ॥ ध ॥ २८७ ॥ र्क ॥ २८८ ॥ ॥ २८९ ॥ य ॥ २९० ॥ म ॥ २९१ ॥ अ ॥ २९२ ॥ ध ॥ २९३ ॥ र्क ॥ २९४ ॥ ॥ २९५ ॥ य ॥ २९६ ॥ म ॥ २९७ ॥ अ ॥ २९८ ॥ ध ॥ २९९ ॥ र्क ॥ ३०० ॥

लिकाष्टकपालिनी ॥५॥ कायायनिमकान्ताद्वीकाललादीवशुभदीपि
वदुमित्रमहाभक्तिश्चरूपीमहेश्वरी ॥६॥ भावनिचमहाबादुदो
निवृत्तिनिद्रमाडमायात्रनीनीगंगेच्छादीच्छाविश्वधाम् ॥७॥ कोमा
त्रिगङ्गीत्रिविष्टीयुल्लोणीदलसूनीगायत्रीयमकामाधकामाश्वासवभा
दिनि ॥८॥ श्रीगङ्गाशर्कराविवद्राकल्याणिकयदीनियामुष्णशोभिनीदव
प्रसागिगङ्गाशर्करा ॥९॥ गल्यायविश्वयालक्ष्मीकृष्णवर्णयत्राकिनायमंद

किपिर्जलाक्षीरुद्रकालिसुप्रसक्ति ॥१०॥ किपानीत्राद्विश्वेष्टायायुक्तनिरुनः
नम्यत्रीवनालीयगदमादिद्वयनिद्रात्राशिवा ॥११॥ जयध्वजैत्रवीभीता
मृजनिविश्ववामिनीयद्रावकिविगात्राक्षीगमश्रीयाम्भीकावनी ॥१२॥ विवृ
याक्षीमहामायासंकात्रीनिकृष्टश्वरीनागमनीनागानीष्टुद्रायित्वागमवि
नाकिनी ॥१३॥ त्रकाक्षीयमहाद्यागारुणामागारुणेश्वरीसर्वसिद्धिगगना
क्षीरयायसर्वमंगला ॥१४॥ रुवानिराविनिद्रुज्जविद्यानाक्षयकालिनी

वनामभारं शुभं यत्तु यदि नदी (१॥५॥) सर्वं यावत्तु नित्यं शिव लोका
 न गच्छति शुभं यावत्तु नवम्भारं यत्तु नदी (१॥५॥) यत्तु नदी (१॥५॥) यत्तु नदी (१॥५॥)
 सर्वं कामं लयं धनं यत्तु नदी (१॥५॥) यत्तु नदी (१॥५॥) यत्तु नदी (१॥५॥)
 नसां शुभं सकां नदी (१॥५॥) यत्तु नदी (१॥५॥) यत्तु नदी (१॥५॥)
 यावत्तु नदी (१॥५॥) यत्तु नदी (१॥५॥) यत्तु नदी (१॥५॥)
 यावत्तु नदी (१॥५॥) यत्तु नदी (१॥५॥) यत्तु नदी (१॥५॥)

नां यत्तु नदी (१॥५॥) यत्तु नदी (१॥५॥) यत्तु नदी (१॥५॥)
 यत्तु नदी (१॥५॥) यत्तु नदी (१॥५॥) यत्तु नदी (१॥५॥)
 यत्तु नदी (१॥५॥) यत्तु नदी (१॥५॥) यत्तु नदी (१॥५॥)
 यत्तु नदी (१॥५॥) यत्तु नदी (१॥५॥) यत्तु नदी (१॥५॥)
 यत्तु नदी (१॥५॥) यत्तु नदी (१॥५॥) यत्तु नदी (१॥५॥)
 यत्तु नदी (१॥५॥) यत्तु नदी (१॥५॥) यत्तु नदी (१॥५॥)

॥ यत्तु नदी (१॥५॥) यत्तु नदी (१॥५॥) यत्तु नदी (१॥५॥)

१ॐ का प्रजादिभूयमक्रनवदुविधस्तथीनवक्रप्र नीप्रक्रकयाग
 तदयत्रिरुत्रिनसर्ववर्णदिवर्ण। एषां वा एषां समानवियत्रिनवत्र
 एषां नदद्यानयी एषां का वायी निवार्य ॐ निवदतिरुत्रि नास्ति देवद्वि
 तीयः ॥ १ ॥ या नालं वा नु त्रिकदशदि। निगग एषां सर्वेषां लसमद रुष्ट
 नाष्टयकाष्ट किनिजल पवन रुष्ट न जीगमवा विजसवी धीनामसन
 नमयषयग्रह एषां एषां का वायी निवार्य ॐ निवदतिरुत्रि नास्ति देवद्विती

मानमहं ध्वनीयं वता नैर्मलं निर्यं सर्वथा धिनिवाप ॥ २ ॥ ॐ नमो भगवते
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

भक्तिक्रियया यथासंभवं विष्णुं कथयिष्ये ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

सर्वकार्येषु माधव ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

[illegible][illegible]

वसुन्नी ॥ १० ॥ गयेवर्गगायमनावतु (गा) गौयनी नयस्ववस्वगीव । सत्राणिगीध
निवर्सेनिगुयनायुजीदानकथायुर्ग ॥ १० ॥ दण्डतनिनिगानां यस्यावका
कवाण, कनकमयविविर्गककुलयास्यक ॥ ११ ॥ यमवर्गगसरुधे ४ थं यमप
स्यमाला सुनविषूकलरुलसमगीवासुर्वेव ॥ ११ ॥ यज्जन्मन ४ रुलमिदं व
वकुलरुव, मत्याधनिकमदनयरुलमवव । खरुलरुलपविवावकरुलरु
लरुलरुलरुलरुलं निमास्मिन्नलोकनाथ ॥ १२ ॥ नान्यवदामिनष्ट ॥ १३ ॥ मिन्

चिन्तयामि नान्यस्मन्नमिनरुजामिन्नवाद्ययामि। एतत्त्वदीयवनजादय
मादयं०। श्रीश्रीनिवासयूनाक्रमदादि दार्ष्ट्यं॥१३॥ कपुत्रीतिनकललाटि
कुलकेवद्राकुलेकोष्ठुरेनासाध्रमऊनामिकीकवगलवे०।१४॥ कुन्दकैकपी।
सर्वोक्तिरुविद्वज्जनसललिङ्गक०।१५॥ वमुक्तवली०। यद्गीयाविषेक्षितो॥ वेञ्जय
न०। गायालत्राभामि०।१६॥ १७॥ मन्द्रोदयेयमाता विवचिगविक्रवव०। नखे
मृदुहिमि०। यद्वा०। वाभाधनिवमधुवर्सा०। यद्गीयमानं०। यद्वा०। नादिगना

नानयनगतशूलगणसादववाश्मानः कीर्णगालमूर्तिः सहस्रबुद्धिर्नि
दवदवमूनाविः ॥ १३ ॥ कनकवृत्तिनित्यलवन्नलीकाभिलालं यणमऊन
मूर्तीलीयीगयद्वलालं । यरुनितनिगुयालकैंगुवावृवकालं सुललिगवन
मालं नोमिदध्वनसारं ॥ १३ ॥ ॐ नितिकिवावायाविनवितमूकप्रभाउमर्क
समाय ॥ ॥ १५ ॥ नमानावायनाय ॥ मधुसूदनमाधवनामुधुनं धनलीध
नवसूदनवसकन । कनमदितदानकदेलगर्णं गणदवसमयितयादयुर्ग

हविषायरुवयुगामिहवि ॥ ३ ॥ ॐ नितिमधुसूदनसुप्रसमाय ॥

॥ नमः नानायनाय ॥ श्री कुरु नडवान ॥ कनयायरुवगत्रुथी कनयायन
वविदना । कनयायरुवकुरुकथं कुरुकनदना ॥ १ ॥ कुरुननशी कुरुकदवा
नयुर्वरुनमावायरुवऊनदनाधः कुर्यायनकुरुनना रुनकुर्यायनदविदुरुना
कुर्यायनकुरुनधिना कुर्यायन धधोठसानिनरुनायकं कुरुननशी कुरुयाकुरु

का॥ श्रीरुगवान्वाच॥ यन्नदानं कृणोतु श्रीरुगवान्वाच॥ यन्नदानं कृणोतु श्रीरुगवान्वाच॥
सूनहायीदन्तन॥ २॥ कृष्णस्य नक्षत्रादं गीता कृष्णाय नमः॥ अनकानक
नदकाधर्कपूर्वजन्मसमवयागीनीया कृष्णाय नमः॥ भवयादवराव
यायायायनदविदशनाय पूर्वजन्मसहस्रानकायायायनकृष्णनधीनाः धधधक
श्रीकृष्णनक्षत्रनकाका॥ श्रीरुगवान्वाच॥ ॥ कनयूथननगवनकयूथनगजः
वाजिकं कनयूथननरुगनवर्षकधैरुवगिजनादन्त॥ ३॥ कृष्णययाकाहलम

सुखादिनदवरावा ना रुनीं ललाकिणि सामलचननधननकृष्णनलागाहन
यामनगनजा नायकशर्षवाना कृष्णानिमिहिनधकं श्रीरुगवान्वाच॥
॥ श्रीरुगवान्वाच॥ रुमदानननरुगनरुमं रुमिदानगजवाजिकं श्रीरुगवान्वाच॥
गनार्थसूनहायालुनन्दन॥ ४॥ गवनपूयनरुवर्षपूर्वजन्मसहस्रदानविद्यानलथ
लिवदूमिदानयाका नक्षत्राकिणि सामलस्थालिव श्रीरुगवान्वाच॥
लिवदशयायामयानायकशर्षवाना कृष्णनक्षत्रनकाका॥ श्रीरुगवान्वाच॥

[illegible]

॥ कनयूष्यविचित्रस्य कनयूष्यगुणार्क कनयूष्यसदासाग्यार्कार्थकस्य उना
 दन ॥ १ ॥ अश्नननधनासा कनयूष्यनमयवन्तशना कनयूष्यनगुणार्क
 शना कनयूष्यमहासागी कनयूष्यनमयवन्तशना कनयूष्यनगुणार्क
 मयूष्यनमयवन्तशना कनयूष्यनगुणार्क मयूष्यनमयवन्तशना कनयूष्यनगुणार्क
 सनहायकनयूष्यन ॥ ८ ॥ समसमयदार्थक्यनविद्यानविचित्रव्यपश्न सादान
 विद्यायूष्यनसूपाश्न सर्वज्ञशयिचलितवारणादानविद्यानमहासागीशः

नथथयकंशी कृष्णनरुशुनकंका ॥ ॥ नृशुनडवाच ॥ कनयायननक
जानि कनयायननरुयुगकं कनयायसदाभागी कथंरुवनिउनादैन ॥ २ ॥
कृयायनननकजानिव कृयायनयुगनाशुन कृयायनसदाभागीशुसं
वानाधकंशुननशी कृष्णयाकठका ॥ ॥ श्रीरुगवानूवाच ॥ कन्यादा
ननदाजननकजानिव कन्यायननरुयुगकंयवनिद्वारुवनागिहृदया
नन्दन ॥ १० ॥ कन्यादानमयानसाननकवानीववाक्यनयाकयाहया

कानयुगनाशुनवदवनिदायाकानसदाभागीशुन ॥ ॥ नृशुनडवाच ॥ क
नयायरुवमादकनयायनस्यानरुवन् । कनयायरुवकुर्वकः कथंरु
वनिशीमुन ॥ ११ ॥ यत्तज्जर्मसकृयायनाकानदोयशयिवः कृयायनरिववाशुनकृयाय
नजम्बकडुनथथयकंशी कृष्णयाकठकाशुनन ॥ ॥ श्रीरुगवानूवाच ॥ सुनायाः
नरुवमरुवथागमनस्यानवन् नृसुदामनउपकसूनदावाधुनन्दनी ॥ १२ ॥ न
मननशुवायानयाकानयायनडुमनशयिवदस्यायाकगमनयाकयायनरिववाशुयि

अथ वमनसंस्तुतिर्मम इत्येकं द्वाविधानं कुरु कुरु यिव च कं श्री कुरु न नृ ईन कं दा ॥ ॥
नृ ईन उवाच ॥ कनयस्य नरुग विद्या कनयस्य धनाधिकं कनयस्य नरुग ना
र्थ कथं कस्य जनार्दन ॥ १३ ॥ विद्यासयिव कुरु स्य न कुरु स्य या दान धना ॥
पुनरुवाच ॥ रुनं कुरु स्य न त्वं जनाय कुरु न धनस्य नाय कुरु न या नाय कुरु ला
धनं कुरु न नृ ईन उवाच ॥ कुरु या कुरु दा ॥ ॥ श्री रुगवानुवाच ॥ पूर्व जन्म नरुग वि
द्या राम उवाच ॥ धनाधिकं वा ना गतिरुवाच ॥ मूः मून लाया धुनेन्दन ॥ १४ ॥ पूर्व

जन्मसंस्तुत्यान विद्याय स्य न यच्छि न कुरु यिव उरु या दान स्य न धना ॥ धय नृ रव
नृ यिव वा ना नृ सिसिसिय रुग सा ना जा रुयि उा ध कं श्री कुरु न नृ ईन कं दा ॥ ॥
नृ ईन उवाच ॥ विनिरागं रुक्म न कनयाय नरुवत्सुमूर्ख कनयाय रुवत्ता निर
कथं कस्य जनार्दनं समस्तं ता कस्य ना विनिरागं उरु या दान धना ॥
रु लन कुरु या दाना यन मूर्ख इना कुरु या दाना यन ना नी रुग ना ध ध कं नृ ईन न श्री
कुरु या कुरु दा ॥ ॥ श्री रुगवानुवाच ॥ पूर्व जन्म न गसा व कय न स्या च मूर्ख नी रुः